गांधी जीवन में स्व-नियंत्रण का विकास

Development of Self-Control in Gandhi's Life

मनोविज्ञान विषय में एम.फिल. उपाधि के लिए प्रस्तुत
लघु शोध प्रबंध
सत्र- 2014-15

शोधार्थी
ज्योति सावले
2014/05/214/009

शिक्षा विद्यापीठ
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)
पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा – 442005

अनुक्रम

अध्याय		पृष्ठ क्रमांक
1	प्रस्तावना	3-5
2	शोध विधि	6-7
3	परिणाम	8-12
4	विवेचना	13-21
संदर्भ-सूची		22-23
परिशिष्ट- क	प्रत्येक एपीसोड से संबन्धित कथन और थीम्स की सारणी	24-46

सारांश

गांधीजी के कर्तृत्त्व और विचार स्व-नियंत्रण से अभिप्रेत है। किंतु यह विडंबनापूर्ण है कि गांधीजी के जीवन में स्व-नियंत्रण के संबंध में मनोवैज्ञानिक विचारों का आकलन अत्यल्प हुआ है। जबकि इन विचारों का गुणात्मक मूल्यांकन करने से स्व-व्यवस्थीकरण के सिद्धांत का वर्धन संभव है। गांधीजी जीवन में स्व-नियंत्रण के लक्ष्य निर्माण की प्रक्रिया एवं संबंधित कारकों को समझना, संबन्धित बाधाओं और उनसे उबरने के लिए प्रयुक्त मनोवैज्ञानिक तकनीकों तथा स्व-नियंत्रण के इन प्रयासों के परिणाम तथा प्रभावों का अध्ययन इस शोध के व्यापक उद्देश्य थे। प्रस्तुत शोध हेतु गांधीजी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' से कुल ग्यारह एपिसोड का चयन किया गया। ये एपिसोड मांसाहार का परित्याग, ब्रह्मचर्य का पालन, स्वाद का त्याग, सत्यनिष्ठा और उपवास से संबन्धित थे। इन सभी विषयों पर उपलब्ध एपीसोड्स में लक्ष्य निर्माण की प्रक्रिया, बाधाएं, बाधाओं से उबरने में सहायक विचार या गतिविधियां, स्व-नियंत्रण का परिणाम तथा दूसरों पर उसका प्रभाव से संबन्धित प्रक्रिया को समझने हेतु प्रसंगात्मक विश्लेषण विधि का उपयोग किया गया।

किशोरावस्था एवं युवावस्था में पारिवारिक मूल्यों के आधार पर मांसाहार परित्याग के लक्ष्य का विकास हुआ। जबकि इस अवस्था में उन्हें भाषागत कठिनाई और मित्रों के गलत संगत का सामना करना पड़ा। जिससे वे संकल्प, दृढ़निश्चय और पारिवारिक मूल्यों के आधार पर उबर सके। इसका परिणाम यह हुआ कि गांधीजी ने हमेशा के लिए मांसाहार परित्याग किया। युवावस्था में ईश्वरीयनिष्ठा तथा सत्यनिष्ठा के कारण गांधीजी सत्य-वचन के पालन में सफल रहे, जबकि महिला के प्रति आकर्षण इसमें बाधा थी। सत्य-वचन के पालन के कारण गांधीजी में सत्यनिष्ठा और संयम की वृत्ति बढ़ी। प्रौढ़ावस्था में पुस्तकों तथा धर्मग्रंथो का प्रभाव, सेवावृत्ति, संकल्प और पारिवारिक मूल्य के प्रभाव के चलते गांधी जी ने ब्रह्मचर्य के पालन का निर्णय लिया। विकारयुक्त मन और आसक्ति ने इसके पालन में अनेक समस्याएँ खड़ी कीं। किन्तु, सेवावृत्ति और संकल्प के द्वारा इन समस्याओं से वे उबर सके; जिसके परिणामवश गांधीजी लोकसेवा से जुड़ सके।

प्रौढ़ावस्था में ही संयमीवृत्ति का विकास होने पर उन्होने उपवास का निर्णय लिया। जबकि उनका अत्याहारी होना और स्वाद सुख का आनंद लेने का स्वभाव उन्हें हमेशा परेशान करता रहा, फिर भी निराहार उपवास और

आहार की मर्यादा का पालन करते हुए उन्होंने उपवास पर संयम स्थापित किया। इसी अवधि में,पुस्तक तथा साहित्य और व्यक्तियों के प्रभाव के आधार पर स्वाद का त्याग करने में स्व-नियंत्रण का विकास हुआ। गांधीजी का जीभ का स्वाद के प्रति आकर्षण इसमें बाधा थी। लेकिन उनपर कथाओं का परिणाम और अपने दृढ़विश्वास के आधार पर उन्होने स्वाद का त्याग किया।

Summary

Self-control is deeply embedded in each thought and work of Gandhian life. While, such a work can enhance our understanding of process of self-control, it is ironical that Gandhi's life has been minimally assessed in relation to self-control. Against this backdrop, present work is aimed at exploring process of goal-determination, barriers, and techniques to overcome barriers, and outcome and influences of endeavours for self-control. In order to fulfill these objectives, eleven relevant episodes were selected from the book 'Satya ke Prayog'. These episodes were related to abandonment of meat, pursuing celibacy, sacrificing taste, truthfulness and fasting. Later, these were analyzed to identify themes related to goal determination, barriers, and efforts to overcome barriers, outcome and impact of such endeavors of self-control.

During adolescence and youth, family values played central role in shaping goal determination for meat relinquishment. Although, his peer-group pressure and linguistic difficulty created hurdles, but he succeeded through family values, vow and unwavering faith in God. Further, his pledge for speaking truth was inspired by faith in God and belief in value of truth. Attraction towards women was noted as barrier but he succeeded in such endeavours through faith on God. It developed his capacity for restraint. Family values, books, his attitudes for social work also developed goal for celibacy. It was his mental agitation and attachment which created obstructions in efforts for celibacy. However, due to determination for social work and vow, he continued and succeeded. In his pursuance of fasting, Gandhi ji faced psychological dilemma created by sensory habituation but he took on fasting. His attempts to overcome sensory indulgence in deriving pleasure from taste were decided due to impact of books and company of some persons. In this, habituation emerged as a major hurdle but he overcome through his interest in positive stories and indomitable will power.